कभी थी शहर की आन-बान-शान

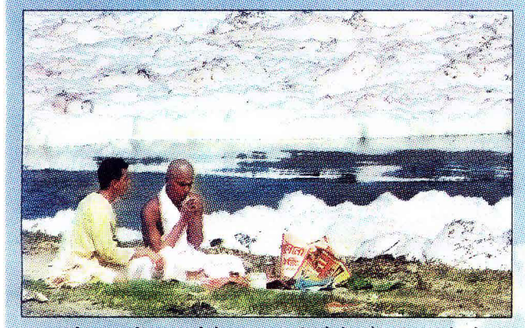

यमुना की आज की हालत को देखकर लोग खासे दुखी होते हों, लेकिन यह बात काफी पुरानी नहीं है जब इसका पानी काफी साफ होता था और नदी की गहराई, लहरों की अठखेलियां और तटों के विस्तार को देखकर दिल्ली और बाहर के लोग हैरान हो जाते थे।

मोटे तौर पर 1982 में हुए एशियाई खेलों से पहले यमुना का रंग-रूप काफी निखरा हुआ था। खेलों के बाद रोजगार के बेहतर विकल्प खुलने से बाहरी लोग दिल्ली की ओर आकर्षित हुए। आबादी के बढ़ते दबाव और खराब सीवर सिस्टम के कारण यमुना का स्वरूप बिगड़ता चला गया। थोड़ा और पीछे जाएं तो मुगलों ने इस नदी की उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए ही इसके किनारे लालकिले का निर्माण किया और यहीं से दिल्ली पर राज किया। लालकिले के पिछवाड़े आज भी उन दरवाजों के निशान मौजूद हैं, जहां से निकलकर मुगल शासक यमुना में नौका विहार करते थे। कभी यह नदी लालकिले की पिछली दीवार के साथ बहती थी लेकिन प्राकृतिक कारणों से दूर होती चली गई। यमुना के पुराने पुल के नीचे आज भी पुराना धोबीघाट है, जिसे मुगलों के जमाने का माना जाता है। मुगलों के परिधान और बाद में अंग्रेजी फौजियों की वर्दियां इसी घाट पर धुलती थीं। आजकल इस घाट पर टेंट आदि धुलते हैं।

विशेष बात यह है कि अंग्रेजों ने भी यमुना के मूल स्वरूप से कोई छेड़छाड़ नहीं की और गंगा नदी की तरह इसमें से नहरें नहीं काटी। देश के आजाद होने तक अंग्रेज लालकिले में ही रहे और प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इस नदी से जुड़े रहे। दिल्ली में यमुना की लंबाई करीब 50 किलोमीटर है। हरियाणा से सटे गांव पल्ला से इसका प्रवेश दिल्ली में होता है और साउथ में जैतपुर गांव के पास से गुजरकर यह वापस हरियाणा में प्रवेश कर जाती है। वजीराबाद पुल तक यमुना का पानी आज भी प्रदूषित नहीं है लेकिन इसके बाद का 25 किलोमीटर में प्रदूषण बहुत ज्यादा है।

पहले बेहद साफ-सुथरा था यमुना का पानी

लंबे समय से दिल्ली में रह रहे लोग बताते हैं कि अस्सी के दशक से पहले यमुना एकदम साफ थी और पुरानी दिल्ली के हजारों लोगों की दिनचर्या सुबह यमुना में नहाने और वहां पूजापाठ करने से शुरू होती थी। उस वक्त यमुना में कई तरह की मछलियां पाई जाती थीं।

पुरानी दिल्ली के बाशिंदे अजय कोली बताते हैं कि उस वक्त यमुना में मल्ली, रोहू, सिंघाड़ा, मांगुर, सौल, बाम, पटेर के अलावा और भी कई किस्म की मछलियां मिलती थीं। लोग किनारों पर जाकर यमुना में जाल डालते और अपनी पसंद की मछली पकड़ लेते। तब हर साल यमुना में बाढ़ आती थी और पानी उतरने पर गड्ढों में भारी मात्रा में मछलियां रह जाती थीं, जिन्हें लोग हाथों से पकड़ लेते थे। अब ये बीते जमाने की बातें हैं। अब तो इस नदी में मछली तो क्या, कोई कीड़ा भी तैरता नजर नहीं आता।

लंदन की टेम्स की तरह साफ हो सकेगी यमुना?

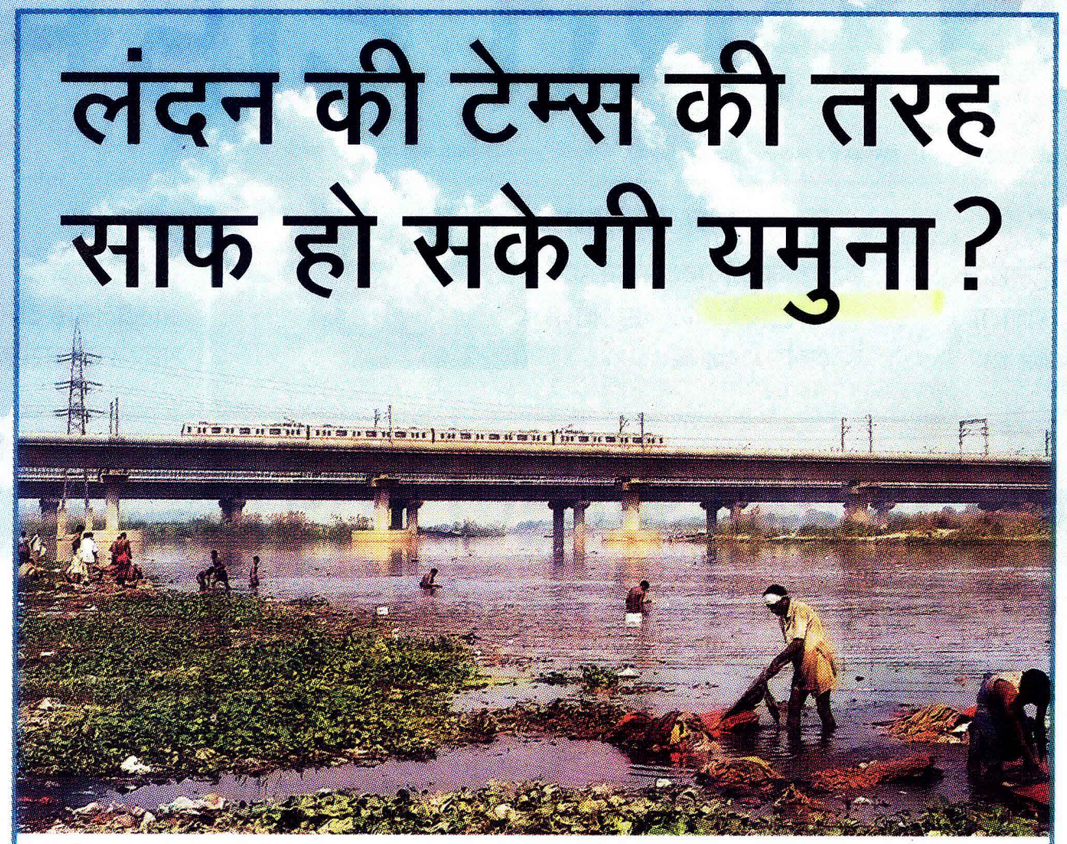

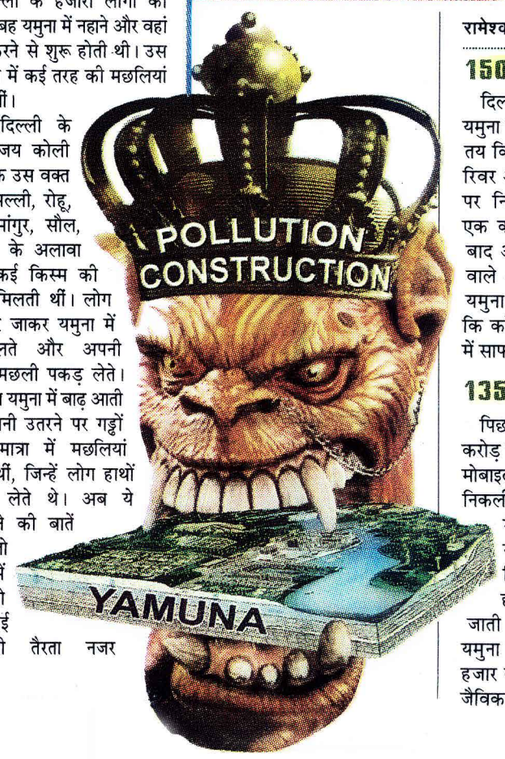

रामेश्वर दयाल ||

1500 करोड़ का बजट तय

दिल्ली के उपराज्यपाल तेजेंद्र खन्ना का कहना है कि यमुना की सफाई के लिए 1500 करोड़ रुपये का बजट तय किया गया है। इस काम के लिए जल्द ही यमुना रिवर अथॉरिटी गठित की जाएगी, जो इस पूरे मिशन पर निगरानी रखेगा। प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने एक कमिटी भी बनाई है, जिसकी रिपोर्ट आने के बाद अथॉरिटी काम शुरू कर देगा। यमुना में गिरने वाले आठ बड़े नालों का पानी साफ करने के बाद यमुना में छोड़ा जाएगा। इस योजना से उम्मीद है कि कॉमनवेल्थ गेम्स से पहले यमुना में भरपूर मात्रा में साफ पानी मिलेगा।

1350 करोड़ रुपये हो चुके हैं खर्च

पिछले दस सालों में यमुना की सफाई में करीब 1350 करोड़ रुपये खर्च हो चुके हैं। अधिकतर धनराशि हजारों मोबाइल टॉयलेट खरीदने पर खर्च की गई, लेकिन इनसे निकली गंदगी फिर से यमुना में ही डाल दी गई। यमुना में गिरने वाले अधिकतर बड़े नालों को भी कभी साफ करने की कोशिशें नहीं की गईं। यमुना के किनारे से हटाई गईं झुग्गी बस्तियों में सीवर न होने से वहां से निकली गंदगी यमुना में ही चली जाती है। 296 एमजीडी गंदा पानी बिना ट्रीटमेंट के यमुना में छोड़ा जाता है। इसके अलावा, रोजाना 20 हजार क्यूसेक से अधिक रासायनिक, औद्योगिक और जैविक कचरा भी यमुना में बहा दिया जाता है।

टेम्स एक उदाहरण

यमुना की सफाई को लेकर टेम्स नदी का उदाहरण इसलिए दिया जाता है कि 70 के दशक में टेम्स इतनी ज्यादा प्रदूषित हो गई थी कि उसमें मौजूद मछलियां मरने लगी थीं। वहां फैली बदबू के कारण लोगों ने नदी के तट पर टहलना बंद कर दिया था। इसके बाद सरकार और लोगों ने मिलकर उसे साफ करने का बीड़ा उठाया और साझा कोशिशों से टेम्स को बिल्कुल साफ कर दिया। सीधी-सी बात है कि यमुना को भी टेम्स नदी जैसा ही निर्मल और स्वच्छ बनाना है तो सरकार की दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ ही जनता को भी सहयोग करना होगा।

अब न रहे वे झूले, न रहे वे मेले

यमुना कभी दिल्ली और आसपास के राज्यों के लोगों के लिए मेले व त्योहारों का हॉट स्पॉट होती थी। नावों में बैठकर लोग इसकी अतल गहराई, चौड़ाई और लंबाई का आनंद उठाते थे। यमुना बाज़ार से लेकर वजीराबाद तक यमुना के किनारे कई घाट हैं। इन घाटों का कई धार्मिक किताबों में भी उल्लेख है। यही घाट सालों से लोगों की आस्था का केंद्र रहे हैं। गंगा स्नान हो, गुरु पूर्णिमा या सावन, नदी किनारे झूले पड़ते थे। इतना ही नहीं, होली-दीवाली जैसे त्योहारों पर भी लोग यमुना में स्नान करने आते थे। उस वक्त यहां मेले लगते थे, लोगों की भीड़ जुटती थी और अखाड़ों में कुश्तियां चलती थीं। मेलों के दौरान दिल्ली देहात के लोग बैलगाड़ी से इस इलाके में आते थे और पास ही पुरानी दिल्ली से खरीदारी भी करते थे। यहां के एक मल्लाह भूप सिंह के मुताबिक जब यमुना अपने मूल स्वरूप में थी, तब इसके किनारे अनेक नावें खड़ी रहती थीं। उस दौरान पुरानी दिल्ली के लोग सुबह-शाम यहां आते थे और नावों में बैठकर घंटों नौकायन का आनंद उठाते थे। उस वक्त यहां मल्लाहों के परिवार रहते थे, जिनकी रोजीरोटी नौकायन से ही चलती थी। मजनू का टीला गुरुद्वारा भी यमुना के किनारे है। उस वक्त सिखों के त्योहार पर यमुना किनारे खासी भीड़ रहती थी और सिख समुदाय के लोग तलवार और पटेबाजी कर लोगों को हैरान कर देते थे। यमुना के पास ही पौराणिक हनुमान मंदिर है। कभी लोग इस मंदिर में पूजा-अर्चना करने से पहले यमुना में स्नान करते थे, लेकिन अब ऐसा कुछ नहीं है। मंदिर में भीड़ तो लगातार बढ़ रही है लेकिन आनेवाले लोगों को इस बात की जानकारी नहीं है कि कभी मंदिर में आनेवाले लोग पहले यमुना में स्नान किया करते थे। यमुना के किनारे कई अखाड़े हैं, जहां से कई नामी पहलवान निकले हैं। चंदगीराम का अखाड़ा भी यमुना किनारे है। पुरानी दिल्ली के पहलवान नत्थू सिंह के मुताबिक कभी यमुना के किनारों पर पहलवानों का हुजूम जुटता था। वे अखाड़ों में पहलवानी करते थे, दांवपेंच सीखते थे और यमुना में नहाकर घर को लौटते थे। अखाड़े अब भी यहां चल रहे हैं, पहलवान अब भी वहां अखाड़ेबाजी कर रहे हैं लेकिन यमुना में नहाने से वे परहेज करने लगे हैं।

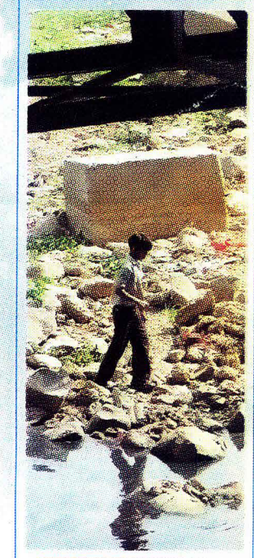

जाने कहां गए वो दिन...

- यमुना किनारे लगते थे मेले
- नौका विहार भी होता था खूब
- कई मशहूर अखाड़े भी थे

दिल्ली में यमुना का सफर

प्रवेश पल्ला गांव से	चौड़ाई 1.5 से 3 किलोमीटर
निकास जैतपुर गांव से	नाले 17
लंबाई 50 किलोमीटर	सबसे बड़ा नाला नजफगढ़
प्रदूषण वजीराबाद से जैतपुर तक	पुल 7
दायरा 97 वर्ग किलोमीटर	बांध 3

है कोई जो यमुना को बचाए : मुख्यमंत्री

यमुना में हो रहे गंभीर प्रदूषण का मसला राजधानी में चल रहे प्रवासी भारतीय सम्मेलन में भी उठा। दिल्ली की मुख्यमंत्री शीला दीक्षित ने प्रवासी भारतीयों से यमुना को प्रदूषण से मुक्त बनाने में विशेषज्ञ सेवाएं देने का आग्रह किया।

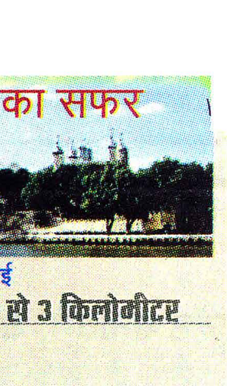

सम्मेलन को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने प्रवासी भारतीयों से कहा कि यमुना की हालत बहुत खराब है और यह नदी बदहाल स्थिति में है। इस पौराणिक नदी को प्रदूषण मुक्त और एक बार फिर दिल्ली की लाइफ लाइन बनाना बड़ी चुनौती है। उन्होंने कहा कि आप में से कोई है जो इस नदी को साफ रखने की महारत रखता हो। हमें आपकी विशेषज्ञता का लाभ उठाने में खुशी होगी। दिल्ली वालों के लिए यह गर्व की बात होगी कि यमुना अपने पुराने रूप में आ जाए।

उन्होंने कहा कि वर्ष 2010 में होने वाले कॉमनवेल्थ गेम्स को ध्यान में रखते हुए राजधानी का चेहरा पूरी तरह बदला जा रहा है। इस कड़ी में यमुना को प्रदूषण मुक्त करना भी शामिल है। उन्होंने कहा कि यमुना विश्व की सर्वाधिक प्रदूषित नदियों में से एक है इसलिए इसे प्रदूषण मुक्त करने और पुराने स्वरूप में वापस लाने में प्रवासियों को योगदान सराहनीय रहेगा। प्रवासी भारतीय समुदाय से यमुना की सफाई के लिए गुहार लगाते हुए मुख्यमंत्री ने स्वीकार किया कि किसी जमाने में पवित्र नदी रही यमुना अब गंदे नाले में तब्दील हो चुकी है।

राजधानी में यमुना को साफ करने की कवायद एक बार फिर शुरू हो गई है। दावा किया जा रहा है कि जून 2010 तक यमुना फिर से लंदन की टेम्स नदी जैसी दिखने लगेगी। यमुना की सफाई पर अब तक करोड़ों रुपये बहाए जा चुके हैं लेकिन यह और ज्यादा प्रदूषित होती गई। फिर उम्मीद जताई जा रही है कि नाले में बदल चुकी इस पौराणिक नदी को 'यमुना मैया' के रूप में पहचान मिल जाएगी। यमुना की साफ-सफाई की योजनाओं पर पेश है आज की रिपोर्ट :

इसके बावजूद बढ़ता रहा प्रदूषण

बताते हैं कि मुख्यमंत्री शीला दीक्षित ने अपने कार्यकाल के शुरुआती दौर में टेम्स नदी की तर्ज पर यमुना को साफसुथरा और खूबसूरत बनाने का ऐलान किया था। लेकिन करोड़ों रुपये खर्च होने के बावजूद यमुना मैली ही रही। इस बाबत सुप्रीम कोर्ट ने भी कई बार केंद्र और दिल्ली सरकार को फटकार लगाई। प्रदूषण नियंत्रण व पर्यावरण विभाग के मुताबिक यमुना के ज्यादातर हिस्सों में बायो ऑक्सिजन की मात्रा जीरो पाई गई। इसका अर्थ हुआ कि वहां कोई भी जीव अधिक समय तक जीवित नहीं रह सकता।

अवैध कॉलोनियां भी जिम्मेदार

केंद्रीय शहरी विकास राज्य मंत्री अजय माकन का तर्क है कि राजधानी की अवैध कॉलोनियों में रहनेवाले करीब 40 लाख लोगों को जब तक बेहतर सीवर सुविधाएं उपलब्ध नहीं कराई जाएंगी, यमुना में प्रदूषण खत्म नहीं हो सकता। इन कॉलोनियों से निकला सीवर कचरा अभी भी यमुना में जा रहा है। माकन के मुताबिक केंद्र सरकार इसीलिए इन कॉलोनियों को नियमित करने की प्रक्रिया में जुटी है, ताकि वहां उचित सीवर सिस्टम उपलब्ध कराया जा सके। ऐसा होने से यमुना में प्रदूषण काफी घट जाएगा।

ऐसे होगी साफ...

- यमुना में गिरनेवाले नालों के पानी को जमा करने के लिए कंक्रीट की ड्रेन बनाई जानी चाहिए। नालों का पानी यमुना में न गिरकर ड्रेन में आए। बाद में निजामुद्दीन के पास इस पानी को ट्रीट कर यमुना में डाला जाए।
- किनारों का सौंदर्यीकरण जरूरी है ताकि लोग यहां घूमने आएं और इस नदी का महत्व समझें।
- नदी के दोनों ओर दीवार बना देनी चाहिए। इससे यह अलग से नजर आएगी। वैसे, इस मामले पर सालों पहले पुणे रिसर्च इंस्टिट्यूट प्रोजेक्ट बनाकर दिल्ली सरकार को दे चुका है।
- अगर नालों के लिए ड्रेन बनाना मुमकिन नहीं है तो हर नाले के मुहाने पर ट्रीटमेंट प्लांट बनाए जाएं ताकि गंदे पानी को साफ करने के बाद ही यमुना में छोड़ा जाए।
- यमुना में हमेशा पानी का बहाव बनाए रखने के लिए पड़ोसी राज्यों से तालमेल किया जाए।
- नदी को गहरा किया जाना जरूरी है। ऐसा होने से बरसाती पानी इसमें टिक सकेगा और ग्राउंड वॉटर में भी बढ़ोतरी होगी।
- यमुना के किनारे बसी रिहायशी आबादी को हटाना जरूरी है। इसके अलावा, नदी की तलहटी में अवैध निर्माण और अतिक्रमण बंद किया जाना जरूरी है।
- नदी को पुराने स्वरूप में लाने के लिए सरकार को जनता का सहयोग लेना चाहिए। जन भागीदारी से यमुना की सफाई की कोशिशें सिरे चढ़ सकती हैं।

मछलियां भी नहीं बची हैं पानी में

दिल्ली के बीच से गुजर रही यमुना को नदी कहना बेमानी है। न इसमें साफ पानी है, न गहराई। मछलियों और दूसरे जीव-जंतुओं का तो कोई अतापता ही नहीं है। गर्मियों में यमुना से इतनी बदबू उठती है कि आसपास से गुजरना भी दूभर हो जाता है।

नदी बनी नाला

- पानी में ऑक्सिजन बिल्कुल नहीं बची है
- गर्मियों में उठती है नदी से बदबू
- पानी में ऑक्सिजन बिल्कुल नहीं बची है

यमुना में पानी के बहाव की रुकावट भी इसके प्रदूषण की प्रमुख वजह है। इसमें गिरने वाले करीब 17 छोटे-बड़े नालों ने इसका स्वरूप ही बिगाड़कर रख दिया है। वजीराबाद पुल पर खड़े होकर पूर्व की ओर देखो तो यमुना वाकई में नदी नजर आती है। वहां गहराई

दिखती है, पानी भी हिलोर मारता नजर आता है। लेकिन दक्षिण दिशा की ओर देखो तो यह नदी अचानक ही बड़े नाले में तब्दील हो जाती है। वजीराबाद बैराज से ओखला तक करीब 25 किलोमीटर की लंबाई में कहीं भी ऐसा पानी नहीं नजर आता, जिसमें नहायी जा सके या धार्मिक रिवाज के अनुसार नदी के पानी का आचमन किया जा सके। हालात यह है कि छठ पर्व के अवसर पर हरियाणा सरकार द्वारा अतिरिक्त पानी छोड़े जाने के बावजूद इसकी गंदगी और प्रदूषण में कमी नहीं आई।

पॉलिसी मेकर और सिटी प्लैनर आर. जी. गुप्ता का कहना है कि यमुना में बायोऑक्सिजन डिमांड (बीओडी) न के बराबर है। यानी यमुना के पानी में ऑक्सिजन की मात्रा गायब है। इसलिए उसमें जलीय प्राणी तो क्या, गंदे पानी में रहनेवाले कीड़े भी मुश्किल से जिंदा रह सकते हैं। बीओडी की कमी के कारण ही यमुना का पानी नहाने लायक भी नहीं बचा। बरसात के एक-दो महीनों को छोड़ दे तो बाकी साल यमुना में गंदा पानी बहता रहता है। गंदों नालों से गुजरकर आने वाला सीवर का पानी, कचरा, फैक्ट्रियों के केमिकल्स आदि नदी में आते हैं। यमुना के किनारे रहने वाले इतवारी लाल के अनुसार गर्मियों के दिनों में तो नदी का पानी इतनी बदबू करने लगता है कि यहां रहना दूभर हो जाता है। इसी पानी से आसपास के खेतों की सिंचाई की जाती है। इससे फसलों की क्वॉलिटी का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है।

बताते हैं कि पिछले चार साल के दौरान यमुना की तलहटी से हजारों झुग्गियां हटाई गईं। उसके बाद लगने लगा था कि यमुना का पानी कुछ साफ हो जाएगा, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। इन झुग्गी बस्तियों को हटाने के बाद यमुना के किनारे तो लंबे चौड़े नजर आने लगे लेकिन प्रदूषण में कोई कमी नहीं आ पाई। ज्यादातर प्रदूषण गंदे नालों से हो रहा है और इन पर रोक लगाने की आज तक कोशिश नहीं की गई।